

पटना, सोमवार, 23 दिसम्बर, 2002 6

मुजफ्फरपुर

भिखमंगों की जिंदगी जी रहे गरीबों को लालकार्ड भी नसीब नहीं

सम्राट कुमार

कांटी, 22 दिसम्बर। 'उफ' ये ठंड का मौसम। जीर्ण हड्डियों को भेदती शीतलहर से बचने के लिए आसमान रूपी छत एवं घरा रूपी बिस्तर। ठंड से लड़ने के अलावे भुखमरी से भी लड़ना। शरीर में चलने की ताकत नहीं है पर दो-दो दुश्मनों से स्वयं को बचाए रखने की कोशिश जारी है। ये ऐसे लोग हैं जिन्हे जीवन के अंतिम पड़ाव तक किसी भी व्यवस्था के तहत किसी भी प्रकार की सरकारी सुविधा नहीं मिल पाई है। गरीबी रेखा से नीचे चयनित 26582 लोगों की सूंची में भी इनका नाम दर्ज नहीं है।

कांटी प्रखंड के लस्करीपुर पंचायत के इन गरीबों के लिए भुखमरी के साथ जीवन पर आफत बन आयी है कड़ाके की ठंड भी छाया : हिन्दुस्तान

सरकारी नजरिऐ से भले ही ये रेखा से उपर हैं किंतु इनके जीने की खातिर खिंच रही व्यवस्था इन्हें भिखमंगे से भी बदतर बनाने को आतुर है। जिले के कांटी प्रखंड की 21 पंचायतों और नगर पंचायत के 2 लाख 22 हजार 803 व्यक्तियों में करीब 1500 ऐसे हैं इन्हें आज तक किसी भी सरकारी योजना का लाभ नही मिल पाया है। आजाद भारत के लगभग सभी सत्तासीन नेताओं द्वारा घोषित गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम से वंचित इन गरीबों को पंचायती राज व्यवस्था से भी कुछ प्राप्त न हो सका। चाहे वे लस्करीपुर पंचायत के वासी जंगली सहनी हों या रामवृक्ष पासवान, सभी की नियति एक समान है। न खाने के लिए अनाज है और न तन ढकने के लिए पर्याप्त वस्त्र। ग्रामीणों से दया भाव से मिल जाने वाला यदा-कदा भोजन इन्हें जिंदा रखे हुए है। वहीं इधर-उधर से मिले चीथड़ों से तन ढंकने के सहारे वे स्वयं को बचाने का अफसल प्रयास कर रहे हैं।

पटना, सोमवार, 23 दिसम्बर, 2002

6

मुजफ्फरपुर

भिखमंगों की जिंदगी जी रहे गरीबों को लालकार्ड भी नसीब नहीं

सम्राट कुमार

22

कांटी, दिसम्बर। 'उफ' ये ठंड का मौसम । जीर्ण हड्डियों को भेदती शीतलहर से बचने के लिए आसमान रूपी छत एवं घरा रूपी बिस्तर। ठंड से लड़ने के अलावे भुखमरी से भी लड़ना । शरीर में चलने की ताकत नहीं है पर दो-दो दुश्मनों से स्वयं को बचाए रखने की कोशिश जारी है। ये. ऐसे लोग हैं जिन्हे जीवन के अंतिम पड़ाव तक किसी भी व्यवस्था के तहत किसी भी प्रकार की सरकारी सुविधा नहीं मिल पाई है। गरीबी रेखा से नीचे चयनित 26582 लोगों की सूची में भी इनका नाम दर्ज नहीं है।.

4

सरकारी नजरिए से भले ही ये रेखा से उपर हैं किंतु इनके जीने की खातिर खिंच रही व्यवस्था इन्हें भिखमंगे से भी बदतर

बनाने को

आतुर है। जिले के कांटी प्रखंड की 21 पंचायतों और नगर पंचायत के 2 लाख 22 हजार 803 व्यक्तियों में करीब 1500 ऐसे हैं इन्हें आज तक किसी भी सरकारी योजना का लाभ नही मिल पाया है। आजाद भारत के लगभग सभी सत्तासीन नेताओं द्वारा घोषित गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम से वंचित इन गरीबों को पंचायती राज व्यवस्था से भी कुछ प्राप्त न हो सका। चाहे वे लस्करीपुर पंचायत के वासी जंगली सहनी हों या रामवृक्ष पासवान, सभी की नियति एक समान है। न खाने के लिए अनाज है और न तन ढकने के लिए पर्याप्त वस्त्र । ग्रामीणों से दया

भाव से मिल जाने वाला यदा-कदा भोजन इन्हें जिंदा रखे हुए है। वहीं इधर-उधर से मिले चीथड़ों से तन

कांटी प्रखंड के लस्करीपुर पंचायत के इन गरीबों के लिए भुखमरी के साथ जीवन पर आफत बन आयी। ढंकने के सहारे वे स्वयं को बचाने

छाया : हिन्दुस्तान

का अफसल प्रयास कर रहे हैं।

है कड़ाके

की ठंड भी